सावन की हरियाली छाई
पावनता की सुगंध महकाई
प्रभु प्रेम की बजी शहनाई
मिलन की सुन्दर घड़ी आई
संगम की ऋतु जब आई
प्रीतम ने ज्ञान मुरली बाजाई
गोपियाँ नंगे पैर भागती आई
जग करने लगा रुसवाई
लोकलाज तज रास रचाने आई
ज्ञान वीणा के तार झंकाई
जीवन में मधुरता लाई
सुहानी चली पुरवाई
प्रभु मिलन की घड़ी अब आई !!
आत्म पंछी ने ली ऊंचाई
राहत मिली दिल की तनहाई
मन की बगिया में कली मुस्काई
प्राण प्यारे की 'मीठे बच्चे'
कहने की आवाज़ जब आई!!

ॐ शांति